राजकुमारी चन्दनबाला

चम्पानगरी के राजा दधिवाहन एवं महारानी धारणी की पुत्री राजकुमारी वसुमती राजभवन के उद्यान में रात को देखे अपने स्वप्न को याद कर चिन्तामग्न बैठी थी।

उसे चिन्तित देख एक दासी महारानी के पास गयी।

महारानी जी ! राजकुमारी उद्यान में उदास सी बैठी हैं।

यह सुन महारानी एवं महाराज उद्यान में वसुमती के पास आए।

महाराज को आते देखकर वसुमती ने खड़े होकर उन्हें प्रणाम किया। माँ ने पूछा—

बेटी ! क्या बात है ? तू उदास क्यों बैठी है ?

माँ, मैंने आज रात के अंतिम प्रहर में एक बड़ा डरावना स्वप्न देखा है।

क्या स्वप्न देखा ? बेटी !

पिताजी ! मैंने देखा कि चंपा नगरी कष्टों में घिर गयी है। चारों ओर लूट-मार हो रही है।

तभी एक सीमा रक्षक ने उद्यान में आकर सूचना दी—

महाराज ! कौशाम्बी की सेना ने हमारे राज्य पर आक्रमण कर दिया है।

समाचार सुनते ही महाराज अत्यन्त चिन्तित हो गये। उन्होंने तुरन्त सेना को युद्ध के लिये तैयार होने का आदेश दिया।

चम्पा की सेना ने डट कर कौशाम्बी की सेना का मुकाबला किया।

किन्तु कौशाम्बी की सेना के आगे टिक न सकी और हार गयी। चंपा के राज दधिवाहन भी युद्ध में लापता हो गये। कौशाम्बी की सेना ने चम्पा पर अपना कब्जा कर लिया और लूटपाट शुरू कर दी।

एक सैनिक लूट के उद्देश्य से महल में घुस कर घूम रहा था तभी उसकी नजर रानी एवं राजकुमारी वसुमती पर पड़ी। उनकी सुंदरता देखकर उसका मन डांवाडोल हो गया। उन्हें साथ ले जाने के लिए उसने तुरन्त एक बहाना बनाया और बोला—

और वह दोनों को अपने साथ ले वन की ओर चल दिया।